



Sanvahak (संवाहक)

An International Peer Reviewed, Refereed, Indexed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

IIFS Impact Factor-5.25

Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2026

Page No.- 51-54

©2026 Sanvahak

<https://sanvahak.gyanvividha.com>

Author's:

डॉ. मेरली के पुन्नूस

सह आचार्य, हिंदी विभाग, सेंट स्टीफेंस कॉलेज, उषवूर.

Corresponding Author :

डॉ. मेरली के पुन्नूस

सह आचार्य, हिंदी विभाग, सेंट स्टीफेंस कॉलेज, उषवूर.

आदिवासी समाज के प्रतिरोध का सशक्त दस्तावेज : 'क्रांतिपथ'

शोध सार : बरसों से सहते आए शोषण, अन्याय और अत्याचार की सीमा जब टूट जाती है तब प्रतिरोध मुखर हो उठता है। प्रतिरोध अपने अधिकार को हासिल करने, सम्मान पाने, जुल्म -ओ - सितम के खिलाफ होता है और अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए होता है। हाशिएकृत समाज विशेषकर आदिवासियों के प्रतिरोध को हिंदी उपन्यासों के द्वारा वाणी दी जा रही है। आदिवासी समाज के प्रतिरोध की अभिव्यक्ति का सशक्त दस्तावेज है 'क्रांतिपथ'। मधुराज मधु के इस उपन्यास के केंद्र में आदिवासियों के प्रतिरोध, उनके संघर्ष को धारदार शब्दों में प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्द : क्रांतिपथ, क्रांति, शिक्षा, भूख, विद्रोह, संघर्ष, वैचारिक क्रांति, लहलुहान।

विषय-वस्तु : आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर अनेक उपन्यास रचे जा रहे हैं। उपन्यासों के ज़रिए उनके संघर्ष, अधिकारों और मान -सम्मान के साथ जीने की चाहत को शब्दबद्ध किया जा रहा है। आज़ादी के बाद की उनकी स्थिति बद से बदतर ही है और उनका संघर्ष आज भी जारी है। अपनी संस्कृति, परंपरा को सुरक्षित रखने के साथ -साथ जीवन को बेहतर बनाने की ललक भी उनके संघर्ष में निहित है जुल्मो - ओ - सितम को सहते हुए उनमें चेतना आ गई है कि वे आज अपना प्रतिरोध दर्ज करने लगे हैं। उनका प्रतिरोध जल, जंगल और जमीन पर अपने अधिकार को स्थापित करने के लिए हैं - "पूंजीवाद के विस्तार के साथ ही उदारवादी नीतियों के चलते आदिवासियों या देशज समूहों के जंगल, जल, जमीन को उनसे छीना जाने लगा। इससे पहले स्थानीय शासकों का आदिवासी समुदायों के जीवन में दखल सीमित था। औपनिवेशिक सत्ता ने आदिवासियों पर अत्याचार जारी रखे, जिनके खिलाफ आदिवासी विद्रोह भी करते रहे। पूंजीवादी भूख ने तथाकथित मुख्यधारा से कटे आदिवासी समुदायों को निशाना बनाया, जिसकी दुनियाभर में प्रतिक्रियाएं भी हुईं और लोगों का इस ओर ध्यान गया। स्वयं आदिवासी

समाज के, या उससे गहरे में जुड़े लोगों ने उनके सवाल को उठाना शुरू किया।¹

क्रांतिपथ उपन्यास के द्वारा रचनाकार मधुराज मधु ने उनके प्रतिरोध को वाणी दी है उपन्यास को लिखने के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं – “क्रांतिपथ ऐसे संघर्ष का आह्वान है जिसमें नफरत, अपेक्षा, अपमान, हैवानियत, जुल्म और गुलामी से लड़ने की ललकार है, और है ऐसी व्यवस्था कायम करने की प्रतिज्ञा जिसमें हर मानव- मानव की तरह जियो। हर इंसान सम्मान, विकास, अधिकार और खुशी का हकदार हो। कथानक के स्थान और पात्र काल्पनिक जरूर हैं, मगर इन पात्रों के माध्यम से चेतना, संघर्ष, एकता और वैचारिक क्रांति के विचारों का जो विश्लेषण पेश किया है, वह शब्द प्रवाह नहीं, तर्कनुमा संवाद नहीं, बल्कि उन तमाम लोगों के लिए ऊर्जा है, जो संगीन हालात से घिरे हैं। मैंने उन तमाम लोगों को धारदार जुबान देने का प्रयास किया है, जिनकी जुबान पर खामोशी के पहेरे हैं। ऐसे समाज में चेतना जगाने की कोशिश की है, जिसके लोग संघर्ष से अनजान हैं, संघर्ष के विचारों से दूर हैं या उनमें साहस नहीं।”²

गैर आदिवासी युवक जीतन उनके संघर्ष को आगे बढ़ाता है, जिसका भाई आदिवासी इलाके में पुलिस इंस्पेक्टर है और वह अपने भाई के साथ ही रहता है। जीतन के आने से आदिवासियों को जीने का नया मकसद मिल जाता है। जीतन का सहयोग पाकर मेगदली का प्रतिरोध और मुखर हो उठता है। अपने पिता सगनू की जमीन पर बनी ठेकेदार लाल साहब की कोठी पर वह तब तक तीर मारती है जब तक कोठी की किसी खिड़की की काँच टूट न जाये। जीतन ने उसे एक दिन ठेकेदार लाल साहब की कोठी की खिड़की पर तीर मारते हुए देखा था – “आँखों के सामने ज्यादा नहीं, थोड़ा सा फासला था। मेगदली के हाथ में धनुष और उस धनुष की कमान से एक के बाद एक निकलते तीर। उसके सामने एक बड़ी लाल कोठी जिसके दरवाजे बंद थे और खिड़कियां भी बंद थीं। धनुष की कमान से निकलने वाले तीर पिछवाड़े की एक बंद खिड़की को भेद रहे थे। मेगदली तीर चलाने में व्यस्त थी। तीर के निशाने पर खिड़की थी और उस आदिवासी बाला के निशाने पर ठेकेदार लाल साहब की दबंग रणनीति थी। वह लाल कोठी लाल साहब की खतरनाक साजिश और दबंग रणनीति की साक्षी थी।”³ गाँव का मुखिया मेगदली का पिता सगनू अपनी जमीन के छीने जाने पर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने के अलावा वह कुछ न कर सका। सगनू के बेटे जोरु की मौत भी ठेकेदार लाल साहब के बदमाश की गोली लगने से होती है। मेगदली का मानना है कि उसके भाई जोरु का बलिदान ही उनके संघर्ष को धारदार बनाने और आगे बढ़ने की दिशा में मददगार साबित होगा। उसे पूरा विश्वास है कि उसके भाई का बलिदान बेकार नहीं जायेगा।

जल, ज़मीन और जंगल पर इनके अधिकार को भी ठेकेदार लाल साहब छीन रहे हैं। सरकार, अधिकारी वर्ग, कानून, पुलिस सब इनके हाथ की कठपुतली बनकर रह गए हैं। आदिवासी इलाके में न स्कूल है, है तो भी मात्र नाम मात्र के लिए, न पीने के पानी का कोई इंतजाम है, बरसों पहले बिजली के खम्भे तो लगे हैं लेकिन अभी तक बिजली के बल्ब लगने की कोई उम्मीद नहीं है। आदिवासी जनता भूखे, अभावग्रस्त, लाचार और बेबस हैं, ऐसे हालातों से गुजरते हुए दर-दर की ठोकरें खाते हुए अपना जीवन बिता रहे हैं। पढ़ने की चाहत होने पर भी मेगदली अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाती क्योंकि बुनियादी सुविधाएँ तक उन्हें नसीब नहीं हैं। भूख से बेहाल होकर पपलू की बच्ची की मौत हो जाती है, जहाँ आजाद भारत के केबिनेट मंत्री और इस क्षेत्र के विधायक हरिनाम बाबू अपने इलाके में किसी भी आदिवासी के भूखे न रहने के नारे लगा रहे होते हैं। अन्याय, सितम को सहते – सहते गवार – अनपढ़ मेगदली इन सबसे से भली – भांति परिचित हो गयी है और अपने समाज को जागरूक करने का कार्य करती है। वह अपने जीवन के लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए कहती है कि – “आसमान को छू लेना नहीं, बल्कि अत्याचार से मुक्त होकर अधिकार और सम्मान पा लेना हमारा लक्ष्य है।”⁴ मेगदली और उसके समाज के लिए जीतन उम्मीद बनकर आता है। उसके आदिवासी इलाके में आ जाने से आदिवासी समाज के सपने साकार हो उठते हैं। आदिवासी समाज एकता के बंधन में बंध जाता है

और इससे मेगदली के संघर्ष को बल मिलता है।

बरसों से अन्याय को सहते आए इन्सान में इतनी क्षमता तो आ ही जाती है कि वह डटकर अन्याय और शोषण का मुकाबला करने लगता है। उपन्यासकार ने उपन्यास में मेगदली को इसके मिसाल के तौर पर प्रस्तुत किया है। पहले चुप्पी साधे रहने वाली, शमनिवाली मेगदली अब चिंगारी बन पूरे समाज को चेताने का कार्य करती है – “कुछ वक्त के बाद मेगदली ने सोये हुए समाज में सोचने की जिज्ञासा पैदा कर दी। लोग आपस में बातें करते। उनकी बातों की विषय वस्तु मेगदली की सोच थी, जो अलसाये मन को स्पंदित कर रही थी। जो लोग निराशा की चादर में दूबककर तंग हालात का ताना-बाना बुन रहे थे, अब उनके मन में नये उत्साह का संचार होने लगा था।”⁵ वह सुप्त पड़े अपने समाज को जगाने का कार्य करती है।

आदिवासी समाज के होने पर भी समरा और भोरु मेगदली की आँखों में खटकते हैं क्योंकि उन्होंने अपना ईमान चंद पैसों के लिए ठेकेदार लाल साहब को बेच दिया है। वह समरा और भोरु से नफरत करती है और अवसर पाकर उनपर टूट पड़ती है। ये दोनों आदिवासी समाज के हमदर्द बनकर वास्तव में उनके शोषक ठेकेदार लाल साहब के दलाल हैं। अपने भरोसे पर आदिवासी समाज को बहका रहे हैं, विश्वासघात कर रहे हैं। वह समरा को मुँह तोड़ जवाब देते हुए कहती है कि – “ऐ समरा ! सब जानती हूँ। मुझसे कुछ छुपा नहीं। तुम हमारे समाज का अंग जरूर हो, समाज में रहते भी हो और समाज की बातें भी करते हो पर सच तो यह है कि तुम ऊँचे लोगों के पाँवों के नीचे दबे हो। तुम उनके गुलाम ही नहीं, बल्कि असली दलाल भी हो। तेरी दलाली सिर्फ सौदा है सौदा”⁶ समरा और भोरु उसके इस बदले तेवर को देख अचंपित होते हैं। मेगदली के बढ़ते साहस को पस्त करने के लिए समरा और भोरु उसकी शादी की साजिश रचते हैं। मेगदली शादी नहीं करना चाहती। उसका जीवन उसके लक्ष्य के लिए समर्पित है। लेकिन पिता का कहा वह नहीं ठुकरा सकती और शादी के लिए राजी हो जाती है। मेगदली की शादी के लिए स्वयंवर समारोह रखा जाता है, जिसका तीर तय की गयी लकीर के पार जायेगा वही वीर नौजवान उसके साथ शादी कर पायेगा। भोरु बाजी जीत जाता है और उसके ललकारने पर मेगदली उसके ललकार को स्वीकार कर धनुष की कमान पर तीर रखकर छोड़ती है जो भोरु के तीर से भी आगे जाकर गिरता है। विवश होकर उसे वर के रूप में भोरु को स्वीकारना पड़ता है, लेकिन मेगदली उसके अहम को चोट पहुँचाती है। उसे समझाते पपलू को वह मुँह तोड़ जवाब देते हुए कहती है – “काका तुम उस परंपरा की बात कर रहे हो, जिसके निर्णय में नारी मन की भावना और स्वतंत्रता की कोई कद्र नहीं। मैं नारी हूँ, बाजार में बिकने वाला कोई खिलौना नहीं जिसे कोई भी खरीद ले।”⁷ वैवाहिक जीवन में भी वह अपना प्रतिरोध जताने से पीछे नहीं हटती। भोरु के बदलने की उम्मीद में वह उसके हर सितम झेल लेती है। भोरु उसे कोड़े से मारता, उसके साथ कैदी सा बर्ताव करता, उसके हौसले को पस्त करने की कोशिश करता है, मेगदली सब कुछ बर्दाश्त कर लेती है। उसके सामने गिडगिडाकर रोती – बिलखती नहीं है। घरेलू हिंसा की पीड़ा सहते हुए भी वह एक दिन भोरु के सामने सीना ताने खड़ी हो जाती है। उसके उग्र रूप को देखकर भोरु शांत हो जाता है – “वह मार से पस्त नहीं हुई, बल्कि बौखला उठी और तनकर भोरु के सामने खड़ी हो गयी। नस-नस में खून उफना उठा। आँसुओं से भरी आँखें भड़कते शोले में बदल गयीं।”⁸ वह भोरु के कैद की दीवार तोड़कर अपने समाज से जा मिलती है और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिन – रात एक कर देती है।

मेगदली और जीतन के मिले-जुले प्रयत्नों से नतीजा यह निकलता है कि आदिवासी जनता अपने अधिकार के लिए उठ खड़े हो जाते हैं। निडर होकर जंगल के पेड़ काटने आये ठेकेदार लाल साहब और उनके बदमाशों को पेड़ काटने नहीं देते। उनका साहस लाल साहब के लिए चुनौती बन जाता है। जीतन के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए ठेकेदार लाल साहब उसे कैदी बनाकर, मारते, पीटते हैं ताकि वह अपने संकल्प से पीछे हट जाये। लेकिन जीतन अपने मकसद में अडिग रहता है और अपने खून का कतरा बहाकर भी क्रांति की लौ को बुझने नहीं देता। मेगदली, जीतन के

अभाव में उनके संघर्ष को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाती है –“भाईयो और बहनों ! यह जंगल हमारा है, जल हमारा है और जमीन भी हमारी है, मगर अफसोस कि इन सब पर हमारा अधिकार नहीं। हमें किसी का अधिकार नहीं चाहिए, हमें अपना अधिकार चाहिए। अपने अधिकार से हम आज तक वंचित रहे, अनजान रहे, मगर जीतन साब ने हम सब में अपने अधिकार के प्रति चेतना जगाई और हमें आगे बढ़ने का एक रास्ता दिया। उन्होंने हम से कुछ लिया नहीं, बल्कि हम बिखरे लोगों में एकता का सूत्रपात किया, हमें चेतना दी और दिया है हमें मंजिल तक पहुँचने का एक पथ। आज उस पथ पर चलकर यहाँ तक पहुँचे हैं। दुख है कि वह हमारे बीच नहीं, मगर उनका मार्गदर्शन तो हमारे साथ है। उनकी सोच तो हमारे साहस के साथ है। उनका संकल्प तो हमारे लक्ष्य के साथ है। हमारा लक्ष्य है अपना अधिकार हासिल करना। यह हमारी प्रतिज्ञा है कि अपना अधिकार लेकर रहेंगे। इसके लिए आपका साथ चाहिए....।”⁹ ठेकेदार लाल साहब द्वारा छीनी गई सगनू की जमीन पर आदिवासियों द्वारा कब्ज़ा कर लिया जाता है। ठेकेदार लाल साहब की कूटनीति की पोल खुल जाती है। वे जेल में बंद कर दिए जाते हैं और आदिवासी समाज की जीत होती है।

निष्कर्ष : गोया कि आदिवासी समाज में चेतना जगाने का कार्य हिंदी साहित्य के द्वारा किया जा रहा है। उनके शोषण को चित्रित करना मात्र साहित्य का ध्येय नहीं है, बल्कि उनके प्रतिरोध को अभिव्यक्त करना भी साहित्य का मकसद है। उनके प्रतिरोध को, संघर्ष को दर्ज करने की दिशा में ‘क्रांतिपथ’ उपन्यास एक कारगर कदम है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. गंगा सहाय मीणा-आदिवासी चिंतन की भूमिका-पृ:14
2. मधुराज मधु - क्रांतिपथ - पृ:17 – 18
3. वही – वही - पृ:36
4. वही – वही - पृ:66
5. वही – वही – पृ: 74
6. वही – वही – पृ:83
7. वही – वही – पृ:126
8. वही – वही – पृ:139
9. वही – वही - पृ:192

•